शीतयुद्ध

Q1) तनाव शैथिल्य क्या है?
Ans दो देशों के तनावपूर्ण संबधो की समाप्ति को तनाव शैथिल्य कहा गया है। 1962 के क्यूबा संकट के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के व्यवहार मे आए परिवर्तनो को तनाव शैथिल्य का नाम दिया गया। क्यूबा संकट के बाद शीतयुद्ध के वातावरण मे कुछ कमी आई और दोनो गुटो के उपजी तनाव की भावना सौहार्दपूर्ण व मित्रता की भावना मे बदलने के आसार दिखाई देने लगे। तनाव शैथिल्य मे शीतयुद्ध से उत्पन्न पुराने अंतराष्ट्रीय संबधो का परिदृश्य बदलने लगा और विश्व मे शांतिपूर्ण वातावरण का जन्म हुआ।

Q2) शीतयुद्ध के दौरान दोनो महाशक्तियो ने किन संगठनो को जन्म दिया।
Ans शीतयुद्ध के दौरान सम्पूर्ण विश्व दो खेमो मे बँट चुका था। अमेरिका व उसके पक्ष के देश पश्चिमी गठबंधन तथा सोवियत संघ व उसके सदस्य देश पूर्वी गठबंधन कहलाते थे। पश्चिमी गठबंधन ने अपने को गठबंधन का रूप प्रदान किया। 12 सदस्यीय उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नोटो NATO) की स्थापना अप्रैल 1949 मे हुई। इसके अनुसार यदि नाटो के किसी भी सदस्य देश पर हमला होता है तो इस संगठन मे शामिल सभी सदस्य अपने ऊपर हमला मानेंगे व उस देश की मदद करेंगे।

Q3) भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति की आलोचना क्यो की गई?
Ans भारत द्वारा अपमानित होने के कारण इसकी दो आधारो पर आलोचना की गई है।
(1) भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति सिद्धांतविहीन है। नाम (NAM) को बनाए रखने के नाम पर अपने राष्ट्रीय हितो का प्रश्रय दिया। इसी कारण भारत अंतर्राष्ट्रीय मामलो मे महत्वपूर्ण समय पर भी दृढ़ निर्णय लेने से बचा।

(2) यह कहा गया कि भारत ने कई बार विरोधाभासी चरित्र अपनाया। यद्यपि भारत दूसरों की गुटों में सम्मिलित होने के लिए आलोचना करता था परन्तु 1971 ई० में इसने स्वयं सोवियत संघ से 20 वर्षीय मित्रता की संधि की। जिसका तात्पर्य था सभी घोषित गुट व्यवस्था में शामिल होना था। भारत सरकार के मतानुसार बांग्लादेश के संकट के समय भारत को सैनिक व कूटनीतिक सहायता की आवश्यकता थी। उसके अनुसार यह संधि भारत को किसी देश से संबंध बनाने से नहीं रोकती यहाँ तक की अमेरिका से भी।

Q(4) भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने के कोई चार कारण लिखिए।

Ans निम्न कारणों ने भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने को प्रेरित किया।

(i) भारत गुलामी से स्वतंत्र रहकर अपने देश का चतुर्मुखी विकास करना चाहता था।

(ii) भारत ने इन दोनों से जुड़ने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि यह जानता था कि संगठन का सदस्य बनने पर उन्हें संगठन के नियमों का पालन करना पड़ेगा।

(iii) संगठन से जुड़ने पर वह भी अस्त्र-शस्त्रों की होड़ में शामिल हो जाएगा। और विश्व शांति को खतरा पैदा हो जाएगा।

(iv) तटस्थ रहकर ही वह परतंत्र देशों की मदद कर सकता था।